संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - ४१ ● ०६ अक्टूबर २०१८ आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

वेदों के स्वाध्याय से ही जीवन को उन्नति के पथ पर ले जाया जा सकता है

– डा0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

मनुष्य का शरीर जड़ है और यह प्रकृति के परमाणुओं व कणों से बना हुआ है। शरीर को बनाने वाला परमात्मा है। कोई भी ज्ञानपूर्वक रचना किसी निमित्त चेतन ज्ञानवान सत्ता से ही होती है। जीवात्मा स्वयं अपने व दूसरों के शरीर की रचना नहीं कर सकते। हां, वह इस कार्य में सहायक हो सकते हैं। परमात्मा जीवात्माओं को सुख व उनके कार्मों का भोग कराने के लिये उनके पूर्व जन्म के कार्मानुसार शरीर को बनाते है। यदि पूर्वजन्म में हमने आधे से अधिक शुभ व पुण्य कर्म किये हैं तो जीवात्मा को मनुष्य का शरीर मिलता है अन्यथा पशु, पक्षी आदि प्राणियों के शरीर मिलते हैं। मनुष्य योनि उभय योनि हैं जहां वह शुभाशुभ कर्म करने के साथ पूर्व किये हुए कार्मों का फल भी भोगता है जबकि सभी मनुष्येतर योनियों में जीवात्माओं को अपने कर्मों का भोग करता होता है। वह स्वतन्त्र कर्ता नहीं होते जिसका कारण यह है कि उनके पास विचार शक्ति वा बुद्धि नहीं है। उनके पास कर्म करने के लिये हाथ भी नहीं है और न ही बोलने व अपनी बात को किसी दूसरे पशु को कहने के लिए वाणी ही है। यही कारण है कि कोई मनुष्य पशु बनना नहीं चाहता परन्तु ज्ञान व संकल्प की कमी के कारण वह अशुभ व पाप करते है जिससे उन्हें परजन्मों में पशु–पक्षियों आदि अनेकानेका योनियों में जन्म लेना पड़ता है। मनुष्यों को पशु आदि निम्न योनियों व मनुष्यों में भी अशिक्षित व अज्ञानी तथा निर्धन व दुर्बल माता–पिता के यहां जन्म मिले, इसके लिये सृष्टिकर्ता ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद ज्ञान दिया था। वह ज्ञान आज भी सुरक्षित एवं उपलब्ध है। उस ज्ञान को पढ़कर व उन पर ऋषियों के भाष्य व टीकायें पढ़कर तथा उनके अनुसार अपना जीवन बनाकर हम पशु पक्षी योनियों में जाने से बच सकते हैं और मनुष्य योनि में भी अच्छे ज्ञानी व वेद धर्मनिष्ठा माता–पिता से जन्म लेकर अपने जीवन को वेद मार्ग पर चला कर सुखी व सम्पन्न रहकर सुख भोग सकते हैं।

मनुष्य का जन्म हमें पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर मिलता है। हम इस जन्म में मनुष्य बने हैं, अतः हमारा कर्तव्य है कि हम अपने कर्तव्यों व अकर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त करें। वेद और ऋषि मुनियों के वेदानुकूल ग्रन्थों जैसे निर्भ्रान्त ज्ञान मत–मतान्तरों के ग्रन्थों से प्राप्त नहीं होता। इसके लिये मुख्य आश्रय केवल वेद व वेदानुकूल ग्रन्थ हैं जो ऋषियों के बनाये हुए हैं। इनका स्वाध्याय कर अपने जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। अपने परिवारों अपना अमूल्य ग्रन्थ जिसे हम वेदवाणी कहते हैं उसे अवश्य रखें हर महंगी से महंगी वस्तु हमें आसानी से खरीद लेते हैं पर यह अनमोल धरोहर ज्ञान का भण्डार हमें फिजूल खर्ची लगता है। आइए हम सभी संकल्प लें कि हमें अपने घरों में वेद रखना है।

समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक सूचना एवं निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कार्यरत् आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/ मंत्री/ कोषाध्यक्ष को सूचित किया जाता है, संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ द्वारा प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं को बावत वर्ष २०१६ एवं वित्तीय वर्ष २०१७–१८ हेतु वार्षिक चित्र प्रेषित किये जा रहे हैं। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों को निर्देशित किया जाता है, कि वे अपनी–अपनी आर्य समाजों का वार्षिक विवरण भरकर संस्था कार्यालय में दिनांक–३० नवम्बर, २०१८ तक वार्षिक चित्र (वार्षिक विवरण) एवं दशांश जमा करके रसीद प्राप्त कर लें तथा निम्न अभिलेख सभा कार्यालय में उपलब्ध करा दें–

०१. सभासदों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।

०२. साधारण सदस्यों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।

०३. वार्षिक चुनाव कार्यवाही पंजिका की छायाप्रति।

०५. चल–अचल सम्पत्तियों का विवरण।

०६. आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के नाम एवं मोबाइल नम्बर एवं आर्य समाज का स्पष्ट पता।

०७. आर्य समाज में कितने कक्ष, यज्ञशाला एवं किरायेदार हैं और कितना किराया देते हैं, का विवरण।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

सभा मन्त्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

वह देव दयानन्द है जिसके ऋण से उऋण नहीं हो सकते

एक समय वह भी था जब सारे संसार का एक ही धर्म था। वैदिक धर्म। एक ही धर्मग्रन्थ था वेद। एक ही गुरू मंत्र था–गायत्री। सभी का एक ही अभिवादन था–नमस्ते। एक ही विश्वास थी –संस्कृत। और एक ही उपास्य देव था – सृष्टि का रचयिता परमपिता परमेश्वर, जिसका मुख्य नाम ओ३म् है। तब संसार के सभी मनुष्यों की एक ही संज्ञा थी– आर्य। सारा विश्व एकता के इस सप्त सूत्रों में बंधा, प्रभु का प्यार प्राप्त कर सुख शान्ति से रहता था। दुनिया भर के लोग आर्यावर्त कहलाने वाले इस देश भारत में विद्या ग्रहण करने आते थे। अध्यात्म और योग में इसका कोई सानी नहीं था।

किन्तु महाभारत युद्ध के पश्चात् ब्राह्मण वर्णीय जनों के 'अनभ्यासेन वेदानां' अर्थात् वेदों के अनभ्यास तथा आलस्य और स्वार्थ बुद्धि के कारण स्थिति बदली और क्षत्रियों में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'' वाली एकतांत्रिक समान्तवादी प्रणाली चल पड़ी। धर्म के नाम पर पाखंडियों अर्थात वेदनिन्दक वेदविरूद्ध आचरण करने वालों ने जगतगुरू सबका सरताज कहलाने वाला था उसे मोहताज बना दिया गया।

दासता की इन्हीं बेड़ियों को काटने और धर्म का वास्तविक स्वरूप बताने के लिए युगों–युगों के पश्चात् इस भारत भूमि गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम की मिट्टी से एक रत्न पैदा हुआ जिसका नाम मूलशंकर रखा गया। जो बाद में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' के नाम से विश्वविख्यात् हुआ। जब उसने धर्म के नाम पर पल रहे घोर अधर्म, अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, गुरूड़मवाद, जन्मगत मिथ्या जात्याभिमान, बहुदेववाद, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध और मूर्ति पूजा आदि बुराइयों के विरूद्ध पाखण्ड–खण्डिनी पताका को फहराते हुए निर्भय नाद किया तो सारा भूमंडल टंकारा वाले ऋषि की जय जयकार कर उठा।

उसकी इस विजय के पीछे सबसे बड़ा कारण चिरकाल से सोई हुई मानव जाति को उसके वास्तविक धर्म से परिचित कराना था। महर्षि ने धर्म के नाम पर लुटती मानवता को अज्ञान अन्धकार से बाहर निकालकर सत्य सनातन वैदिक धर्म में पुनः स्थापित किया। आज यदि हम निष्पक्ष होकर तुलना करें कि वैदिक सम्पत्ति को हमारे समक्ष किसने प्रस्तुत किया तो वह मुक्तात्मा देव दयानन्द है, जिसके ऋण से उऋण हम तभी हो सकते हैं जब वैदिक धर्म को भली–भांति समझकर अपने जीवन को उसके प्रकाश से आलोकित करें।

वैदिक धर्म संसार के सभी मतों और सम्प्रदायों का उसी प्रकार आधार है जिस प्रकार संसार की समस्त भाषाओं का आधार संस्कृत भाषा है जो सृष्टि के प्रारम्भ से अभी तक अस्तित्व में है। संसार भर के अन्य मत, पन्थ किसी पीर पैगम्बर, मसीहागुरू, महात्मा आदि द्वारा चलाये गये हैं, किन्तु चारों वेदों के अपौरूषेय होने से वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य का चलाया हुआ नहीं है।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ सप्तमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न- जो परमेश्वर जीव को न बनाता और सामर्थ्य न देता तो जीव कुछ भी न कर सकता। इसलिए परमेश्वर की प्रेरणा ही से जीव कर्म करता है।

उत्तर- जीव उत्पन्न कभी न हुआ, अनादि है। जैसा ईश्वर और जगत् का उपादान कारण नित्य है। और जीव का शरीर तथा इन्द्रियों के गोलक परमेश्वर के बनाये हुए हैं परन्तु वे सब जीव के आधीन हैं। जो कोई मन, कर्म, वचन से पाप पुण्य करता है वही भोक्ता है ईश्वर नहीं।

जैसे किसी कारीगर ने पहाड़ से लोहा निकाला, उस लोहे को किसी व्यापारी ने लिया, उसकी दुकान से लोहर ने ले तलवार बनाई, उससे किसी सिपाही ने तलवार ले ली, फिर उससे किसी को मार डाला। अब यहाँ जैसे वह लोहे को उत्पन्न करने, उससे लेने, तलवार बनाने वाले और तलवार को पकड़ कर राजा दण्ड नहीं देता किन्तु जिसने तलवार से मारा वही दण्ड पाता है। इसी प्रकार शरीररादि की उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर उसके कर्मों का भोक्ता नहीं होता, किन्तु जीव को भुगाने वाला होता है। जो परमेश्वर कर्म कराता होता तो कोई जीव पाप नहीं करता, क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धार्मिक होने से किसी जीव को पाप करने में प्रेरणा नहीं करता। इसलिए जीव अपने काम करने में स्वतन्त्र है। जैसे जीव अपने कर्मों के करने में स्वतन्त्र है वैसे ही परमेश्वर भी अपने कर्मों के करने में स्वतन्त्र हैं।

प्रश्न- जीव और ईश्वर का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है?

उत्तर- दोनों चेतनस्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सबको नियम में रखना, जीवों को पाप पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं। और जीव के सन्तानोत्पत्ति उनका पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे बुरे कर्म हैं। ईश्वर के नित्यज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं। और जीव के–

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुः खज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति।। -न्याय सू०।

प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तर्विकाराः सुखदुःखे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गनि।।

-वैशेषिक सूत्र।।

दोनों सूत्रों में (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दुःखादि की अनिच्छा, वैर, (प्रयत्न) पुरूषार्थ, बल (सुख) आनन्द (दुःख) विलाप, अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक, पहिचानना ये तुल्य हैं परन्तु वैशेषिक में (प्राण) प्राणवायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना (निमेष) आंख को मींचना (उन्मेष) आंख को खोलना (जीवन) प्राण का धारण करना (मनः) निश्चय स्मरण और अहंकार करना, (गति) चलना (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों को चलाना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह स्थूल नहीं है।

जब तक आत्मा देह में होता है तभी तक ये ये गुण प्रकाशित रहते और जब शरीर छोड़ चला जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हों और न होने से न हों वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है, वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान गुणद्वारा होता है।

(प्रश्न) परमेश्वर त्रिकालदर्शी है इससे भविष्यत् की बातें जानता है। वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा। इससे जीव स्वतन्त्र नहीं और जीव को ईश्वर दण्ड भी नहीं दे सकता क्योंकि जैसा ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया है वैसा ही जीव करता है।

(उत्तर) ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता का काम है। क्योंकि जो होकर न रहै वह भूतकाल और न होके होवे वह भविष्यतकाल कहाता है। क्यो ईश्वर को कोई ज्ञान होके नहीं रहता तथा न होके होता है? इसलिये परमेश्वर का ज्ञान सदा एकरस, अखण्डित वर्तमान रहता है। भूत, भविष्यत् जीवों के लिये है। हाँ जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर में है, स्वतः नहीं। जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान के ज्ञान और फल देने में ईश्वर स्वतन्त्र और जीव किंचित वर्तमान और कर्म करने में स्वतन्त्र है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म का ज्ञान है वैसा ही दण्ड देने का भी ज्ञान अनादि है। दोनों ज्ञान उसके सत्य हैं। क्या कर्मज्ञान सच्चा और दण्डज्ञान मिथ्या कभी हो सकता है? इसलिये इसमें कोई भी दोष नहीं आता।

प्रश्न- जीव शरीर में भिन्न विभु है वा परिच्छिन्न?

उत्तर- परिच्छिन्न। जो विभु होता तो जागृत, स्वपन, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता। इसलिए जीव का स्वरूप अल्पज्ञ, अल्प अर्थात् सूक्ष्म है। इसलिए जीव और परमेश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध है।

प्रश्न- जस जगह में एक वस्तु होती है उस जगह में दूसरी वस्तु नहीं रह सकती। इसीलिए जीव और ईश्वर का संयोग सम्बन्ध हो सकता है व्याप्य व्यापक नहीं।

उत्तर- यह नियम समान आकारवाले पदार्थों में घट सकता है असमानाकृति में नहीं। जैसे लोहा स्थूल, अग्नि सूक्ष्म होता है, इस कारण से लोहे में विद्युत, अग्नि व्यापक होकर एक ही अवकाश में दोनों रहते हैं, वैसे जीव व्याप्य है। जैसे यह व्याप्य व्यापक सम्बन्ध जीव ईश्वर का है वैसा ही सेव्य सेवक, आधाराधेय, स्वामी भृत्य, राजा प्रजा और पिता पुत्र आदि भी सम्बन्ध हैं।

धरोहर.....

अनुव्रत पितुः पुत्रो-पिता के अनुव्रती हों

- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र० लखनऊ
गुरूकुल पूठ, गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

अथर्ववेद के मंत्र का यह यचुर्थाश हैं आर्य समाज के उपदेशक अपने प्रवचनों में प्रायः उपदेश देते हुए इस वाक्य से समझाते हैं कि हमारा परिवार वैदिक परम्पराओं से युक्त हो पुत्र पिता के अनुव्रती हो उनकी आज्ञा का पालन करने वाले हों। माता के द्वारा मन के नियन्त्रण करने का उपदेश हो वह सबके मन की बात समझकर उनके खान पान एवं स्वास्थ्य का ध्यान करें पत्नी अपने पतिदेव के प्रति मधुर भाषिणी हो परिवार को कल्याणकारी वाणी द्वारा सुन्दर स्वरूप तैयार किया जाये, ऐसा हमारा परिवार होगा तो उसे ही वैदिक परिवार अथवा आर्श परिवार कहा जायेगा उसके ही साथ कुछ मंत्र है जो भाई–भाई में स्नेह आत्मीय भ्रातृत्व की भावना का उपदेश है बहिन के लिए भी ऐसा ही सन्देश है अथर्ववेद में ऐसे सुन्दर परिवार बनाने के लिए प्रत्येक बहिन के लिए, प्रत्येक पति–पत्नी के लिए एवं प्रत्येक पिता पुत्र के लिए यह संदेश है किसी के साथ कोई भेदभाव अथवा पक्षपात की भावना देश काल के आधार पर नहीं वर्तमान में किसी राजनैतिक पार्टी सपा, बसपा, भाजपा, कांग्रेस की भी बात नहीं, ठाकरे की तरह कोई प्रांतवाद भी नहीं है सभी मानव मात्र को यह सन्देश है आजकल गुरूडम चल रहे हैं। धर्म के नाम पर कई प्रकार के पन्थ–सम्प्रदाय मजहब चल रहे हैं उनमें भी किसी से भेदभाव नहीं है सभी पन्थ और सम्प्रदाय इस बात को स्वीकार करते हैं और वे भी इसी प्रकार का अपना परिवार बनाना चाहते हैं क्योंकि यह वाणी वेद वाणी है जो परमात्मा प्रदत्त है इस ज्ञान सागर में जो भी गोता लगायेगा वहीं सुखी जीवन जीने का अधिकारी बनेगा आवश्कता इस बात की है कि आप किसी भी माध्यम से अपने मन को शिव संकल्प के साथ तैयार करें अपनी मानसिक चेतना को परिवार के प्रति समर्पित करें अपने लक्ष्य को निर्धारित करें अपने ऊपर भी आपको पूर्ण नियंत्रण करना होगा मनसा वाचा–कर्मणा उसे व्यवहार में उतारने के लिए तपश्चर्या करनी होगी। आत्मचिंतन के द्वारा अपना आत्म निरीक्षण भी करना होगा। प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहुर्त में जैसा कि मनुस्मृति में आया है– ब्राह्मेमुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थो चानुचिन्तयेत्। कायक्लेशांच तन्मूलान। कायक्लेशांच तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।। प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर आप अपना आत्म निरीक्षण प्रारम्भ करे कि मेरे जीवन में क्या न्यूनता रह गई है जो परिवार अभी मेरे अनुकूल नहीं हो पा रहा है मुझे क्रोध–आलस्य, प्रमाद जैसे दुर्गुणों ने अपना दास तो नही बना लिया है स्वास्थ्य ठीक है फिर दिनचर्या में धार्मिक वातावरण तैयार करने के लिए स्वयं कितना समय दे पा रहा हूँ। आर्थिक स्थिति के लिए कितने समय और पुरूषार्थ की अपेक्षा है उसे पूरा करने के लिए किन–किन साधनों की अपेक्षा है उसे पूरा करने के पश्चात् संस्कार और शिक्षा के लिए कैसा प्रयास चल रहा है? वह आपके सामर्थ्य के अनुसार होना अपेक्षित है यदि न्यून है तो उसे बढ़ाने का प्रयास करना है यदि बढ़ा हुआ है तो उसके नैरन्तर्य की आवश्यकता है। यदि प्रतिदिन निरन्तरता नहीं है तो भी परिणाम आशाजनक नहीं मिलेगा। जैसे परीक्षा काल में छात्र परीक्षा की तैयारी करता है याद किया हुआ पाठ पुनः स्मरण करता है जो याद नहीं है उसे स्मरण करता है प्रतिदिन के अभ्यास से छात्र निश्चिन्त होकर परीक्षा में निर्भय रहता है और अच्छे अंक प्राप्त करे स्वयं प्रसन्न होता है तथा परिवार के सदस्यों एवं अपने गुरूजनों को भी प्रसन्न करता है इसी प्रकार वह व्यक्ति जो अपने परिवार को अपने अनुकूल परम्परा से रखना चाहता है उसके लिए भी इतनी ही तन्मयता सावधानी समर्पण एवं प्रतिदिन अभ्यास की आवश्यकता है।

प्रायः हमारी सभी की भावना तो रहती है कि मेरा परिवार अच्छा हो बच्चे आज्ञाकारी हो, हमारी श्रीमती मधुरभाषिणी हो, अन्य जो विशेषतायें ऊपर कहीं है वे सब प्राप्त हों उसके लिए प्रयास कितना करना है, कैसे करना है। व्यवहारिक रूप में जब तक आचरण नहीं करेंगे तब तक हम उसका पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे। वेद की शिक्षा के प्रतिविश्वास भी तभी प्राप्त कर सकेंगे।

विश्वास के पश्चात् ही उसमें श्रद्धा–आस्था हो पाती है तभी वह उत्साहित होकर निष्ठा से कार्य करता है। प्रत्येक व्यक्ति परिणाम चाहता है पुरूषार्थ करना नहीं चाहता है इसीलिए आज हमारे परिवार टूटते जा रहे हैं पुरानी पीढ़ी के लोग सामूहिक परिवारों में रहकर उन्नति करते थे सभी प्रसन्न एवं निशचिन्त रहते हुए अपने पुत्रों का चरित्र निर्माण करके अपने पितृ ऋण से मुक्त होने का प्रयास चलता रहता था। आज हमारी यह पुरातन परम्परा का लोप हो रहा है जिसका दुष्परिणाम आपके समक्ष है। अभी तक वैदिक परम्परा किसी न किसी रूप में ग्रामों मे सुरक्षित थी आज पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव नगरों से ग्रामें की ओर भी प्रभावी हो गया है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लौटो का नारा देकर यही बताने का प्रयास किया था कि वेद सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से जो ज्ञान दिया है वह मान मात्र के कल्याण के लिए उसमें हम किसी भी वर्गवाद में आकर यदि इस मार्ग से द्वेष करते हैं तो स्वयं अपनी ही हानि है। मानवता का हनन है। आसुरी वृत्तियों का जन्म हो जायेगा और आपके परिवार में राक्षस जन्म लेकर पूरे घर को लंका जैसा वातावरण बना देंगे। हमें अयोध्या जैसा वातावरण बनाना है। जहां राम लक्ष्मण का स्नेह और राम–भरत जैसा त्याग समर्पण दिखाई देगा माता कौशल्या के संस्कार परिवार में रामराज्य लाने में सहयोगी बनेंगे। हमारी भी यही इच्छा ऐसे अच्छे परिवार को प्राप्त करने की रहती है उसके लिए केन्द्र बिन्दु वैदिक परम्परा से ही जुड़ना होगा इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।

"नान्यः पंथसा विद्यतेऽनाय"

अतः स्वयं को सुखी बनाने के लिए वेदानुकूल जीवन जीने का संकल्प लें।

उदाहरण के रूप मे आपको विदित कराना चाहता हूं कि १९७० से लेकर २००० तक एक समय ऐसा आया कि आर्य समाज शताब्दी एवं आर्य महासम्मेलन देश भर में बड़े रूप में आयोजित होने लगे उस अवसर पर यदि शोभायात्रा निकलती थी तो उसके संयोजक श्री रामनाथ जी सहगल आर्य युवा नेता हुआ करते थे। शोभायात्र की व्यवस्था पूर्ण अनुशासन में रहती थी और अंत में उसकी सफलता का श्रेय मान्यवर सहगल जी को ही जाता था। इनके व्रत का अनुपालन करने के लिए अपने सुपुत्र अजय सहगल जी को तैयार किया संस्कार दिये वातावरण बना कर उन्हें मानसिक रूप से तैयार किया वे भी आधुनिक आर्य पुत्रों की तरह अपनी नई दुनिया में रहते हुए परिवार पोषण में संलग्न हो सकते थे लेकिन अपने पिता जी के प्रत्येक कार्य में उनका सहयोग किया और टंकारा ट्रस्ट को भी आपने संभाला सम्मेलनों में पिता जी की तरह ही तन, मन, धन से अपने युवा साथियों की पूरी टीम बनाकर सफल आयोजन करते हैं यह वेद के वाक्य जीवन मे चरितार्थ कर रहें हैं। अब आप अनुमान लगा सकते हैं कि कितना समय परिवार को दिया होगा और आप अत्यन्त प्रसन्न होंगे इनके पौत्र भी अनुवर्ती होकर महर्षि दयानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संकल्पित हैं। आज इनसे प्रेरणा लेकर "अनुव्रत पितुः पुत्रो" पुत्र पिता के अनुव्रती हो को सार्थक करने के लिए आज से ही पुरूषार्थ प्रारम्भ करना है वर्ष में कई बार टंकारा जाकर यहां की व्यवस्था को देखना धन की पूर्ति करना एवं सम्मेलन स्मारिका जैसे कार्यों को समय पर सुव्यवस्थित पूरा करना यह पिता श्री की संयोजन शैली से ही अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह का युद्ध सीखा है आप सभी का स्नेह मिलेगा तो यह आर्य होनहार युवक आर्य समाज के देदीप्यमान नक्षत्र की तरह अपनी विशेष पहचान बनायेंगे प्रभो इन्हें सद्बुद्धि सामर्थ्य प्रदान करें।

सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सहर्ष अवगत कराया जा रहा है अपने–अपने आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम उत्साह और भव्यता के साथ सम्पन्न करायें।

सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की सूचना फोटो सहित पूर्ण विवरण के साथ सभा कार्यालय को भेजें जिससे आर्यमित्र में प्रकाशित किया जा सके।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
सम्पर्क : 9837402192

हरीश कुमार शास्त्री
व्यवस्थापक
सम्पर्क : 9320622205

श्राद्ध और तर्पण किनका करें? मृतकों या जीवितों का

– आचार्य विश्ववृत शास्त्री, लखनऊ

मित्रों श्रद्धा से जो काम किया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं और तृप्ति का नाम ही तर्पण है। अब प्रश्न ये उठता है कि श्राद्ध और तर्पण किनका करा जाए मृतकों का या फिर जीवितों का?

इस लेख के माध्यम से इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया गया है कृपया आप पूर्वाग्रह त्याग कर एक बार निश्चछल मन से पढ़े।

एक बार गुरू नानक देव जी भ्रमण करते हुए शिष्यों सहित तीर्थराज हरिद्वार गए। वहां उन्होंने देखा कि हजारों भावुक अन्ध विश्वासी श्रद्धालु लोग गंगा में खड़े होकर मरे हुए माता–पिता आदि को पानी द्वारा तर्पण व पिण्डदान कर रहे हैं।

नानक देव जी ने सोचा कि इन भोले लोगों को कैसे समझाया जाए, अतः वे भी गंगा की धारा में खड़े होकर पंजाब की तरफ मुहँ करके दोनों हाथों से गंगा का पानी फैंकने लगे।

स्वयं से विपरीत दिशा में जल फेकते देख लोगों को आश्चर्य हुआ तो उन्होंने नानक देव जी से पूछा महाराज! आप ये क्या कर रहे हैं? सरल स्वभाव नानक बोले... ''भाईयों, मैं अपने खेत को पानी दे रहा हूँ।''

यह सुनकर सब लोग हंसे और नानक जी से कहने लगे... ''महाराज इस प्रकार आपके खेतों में पानी पहुचना सम्भव है क्या ?''

तब महात्मा नानक देव जी बोले... ''ओ भोले लोगों मेरा पानी मेरे पंजाब प्रान्त के खतों में नहीं पहुंचेगा तो तुम्हारा मरे हुए माता पिता जो किस योनि में किस देश में और अपने कर्मानुसार क्या फल भुगत रहे हैं, उन्हें तुम्हारा ये तर्पन पिण्ड दान कैसे पहुँचेगा?''

''अतः इस पर विचार करो और अपने जीवित माता पिता और गुरूजनों को श्रद्धा व भक्ति भाव से तृप्त करो तो तुम्हार कल्याण होगा अन्यथा आप दुःख सागर में गोते ही खाते रहोगे।''

वेद (यजुर्वेद २/३४) भी इसी बात को ही करते है कि...

''ओ३म् उर्ज वहन्तो अमृतं घतृं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्।
स्वध्यास्य तर्पयत में पितृन।।''

अर्थात् पितरों अर्थात् 'पिता पाता पालयिता वा' (नरूक्त) अर्थात् रक्षा व पालन करने वाले माता पिता आचार्य आदि जनों को प्रसन्नता पूर्वक तृप्त करो। दूध, उत्तमान्न, ऋतु के ताजा फल आदि देकर अपनी पवित्र कमाई से ही उनकी सेवा करो और धर्मानुकूल अर्थ के उपार्जन में दृढ़ रहो।।

गुरू गन्थ साहिब (राग सेनो मुहल्ला २) में कहा गया है कि ....

''दीवा बले अंधेरा जाये वेद पाठ मत पापां खाये।''

अर्थात् जिस प्रकार दीपक जलने से अंधेरा दूर हो जाता है इसी तरह वेद को पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना बुद्धि के पापों को नष्ट कर देता है।।

अतः मित्रों वेद के मानो वेदानुसार चलों सन्त जन भी वेदों का ही समर्थन करते हैं। मृतक श्राद्ध रूपी पाखण्ड को त्याग कर नित्य प्रति माता–पिता आचार्य आदि जनों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करो यही धर्म है।

अर्थात् पितरों अर्थात् 'पिता माता पालयिता वा (नरूक्त) अर्थात् रक्षा व पालन करने वाले माता पिता आचार्य आदि जनों को प्रसन्नता पूर्वक तृप्त करो। दूध, उत्तमान्न, ऋतु के ताजा फल आदि देकर अपनी पवित्र कमाई से ही उनकी सेवा करो और धर्मानुकूल अर्थ के उपार्जन में दृढ़ रहो।।

गुरू ग्रन्थ साहिब (राग सेना मुहल्ला २) में कहा गया है कि ....

''दीवा बले अंधेरा जाये वेद पाठ मत पापां खाये।''

अर्थात् जिस प्रकार दीपक जलने से अंधेरा दूर हो जाता है इसी तरह वेद को पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना बुद्धि के पापों को नष्ट कर देता है।

अतः मित्रों वेद को मानो वेदानुसार चलो सन्त जन भी वेदों का ही समर्थन करते है। मृतक श्राद्ध रूपी पाखण्ड को त्यागकर नित्य प्रति माता पिता आचार्य आदि जनों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करो। यही धर्म है।

वीर सावरकर

– प्रस्तुति : हरीश कुमार शास्त्री

महाराष्ट्र के नासिक जिले में भगुर नामक गाँव में २८ मई १८८३ ई० को एक धार्मिक प्रतिष्ठित परिवार में वीर सावरकर का जन्म हुआ था। सावरकर तीन भाई थे। तीनों भाइयों ने भारतीय स्वातंत्रता युद्ध में बढ़–चढ़कर भाग लिया।

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई। इसके पश्चात् नासिक और बम्बई में उच्च शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में वे क्रान्तिकारी लेख लिखने लगे थे। उनके लेख और कविताएं साप्तिाहिक पत्रों में छपा करते थे। बी.ए. करने के पश्चात् वे बैरिस्टरी पढ़ने के लिए लन्दन गए। वहां वे श्याम जी कृष्ण वर्मा के सम्पर्क में आए जिन्होंने भारती की स्वतंत्रता के लिए लन्दन में 'इण्डिया हाउस' नाम की संस्था बना रखी थी। कुछ समय बाद इस संस्था का कार्य–संचालन उन्हें ही सौंप दिया गया।

सावरकर ने १० मई १९०७ ई० के दिन भारतीय स्वातंत्र्य–युद्ध की स्वर्ण जयन्ती मनाने का आयोजन किया। इसमें १८५७ ई० के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भारत की स्वतंत्रता के लिए बड़े ओजस्वी भाषण हुए। इन्होंने १८५७ ई० के सिपाही विद्रोह पर ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'' नामक पुस्तक लिखी। इसमें ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा उन्होंने सिद्ध किया कि यह सिपाही विद्रोह न होकर स्वतंत्रता–संग्राम था। इस पुस्तक के कुछ भाग भाषणों में सुनाए तो सरकार ने प्रकाशन से पूर्व ही इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया। फिर भी यह पुस्तक का बहुत प्रचार हुआ। नवयुवकों ने इसे बड़े चाव से पढ़ा, अनेक अंश कण्ठस्थ किए और दूसरों को सुनाए। उन्हीं की प्रेरणा से विदेशों में पढ़ने वाले अनेक प्रतिभाशाली युवक भारती की स्वतंत्रता के लिए कार्य करने लगे, असंख्य क्रान्तिवीरों के वे मार्गदर्शक बन गए।

ब्रिटिश सरकार उनकी गतिविधियों से बहुत चिंतित रहने लगी। फ्रान्स में क्रान्तिकारियों से सम्पर्क कर लिया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया जिसमें उन्हें आरोपी सिद्ध नहीं किया जा सका। उन्हें भारतीय पुलिस को सौंपने के लिए भारत भिजवाने की घोषणा की गई।

इंग्लैण्ड से पानी के जहाज द्वारा जब भारत ले जाए जा रहे थे तो रास्ते में पुलिस की आंखों में धूल झोंककर समुद्र में कूद पड़े। किन्तु वे पुनः बन्दी बना गए। भारत पहुंचने पर उन्हें नासिक जेल में रखा गया। वे बैरिस्टर से बन्दी बना दिए गए। बम्बई में उन पर मुकदमा चलाया गया। कर्नल वायली व अन्य अंग्रेज अधिकारियों की हत्या, बमों व शास्त्रों का संग्रह तथा अंग्रेजी सरकार को उलटने के आरोप में उन्हें आजन्म कारावास का दण्ड दिया गया। एक अन्य मुकदमें में उन पर आरोप लगाया गया कि नासिक के कलेक्टर जैक्सन की हत्या जिस पिस्तौल से की गई कि वह उन्होंने ही भेजा था। इसमें भी उन्हें आजन्म कारावास की सजा सुनाई गई।

दो आजन्म कारावासों की सजा सुनकर वीर सावरकर ठहाका मारकर हँसकर बोल उठे –''यह अत्यन्त मजेदार बात है कि दो जन्मों की सजा घोषित करके अंग्रेजों ने भी हिन्दुओं के पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया है।'' उनके परिवार की सभी सुविधाएँ छीन ली गईं और उन्हें अण्डमान द्वीप के कारागार में भेज दिया गया।

अण्डमान की जेल में उन्हें असीम कष्ट दिए गए। उनसे अनेक घिनौने काम दण्ड के रूप में करवाये गये। उन्होंने अत्यन्त धैर्य तथा वीरतापूर्वक व्यवहार से वे अत्याचार सहे। अपने कमरे की दीवार पर नुकीले पत्थर से लिखकर 'गोमान्तक' नाम काव्यग्रन्थ लिख डाला। उनकी लेखन कला तथा प्रखर राष्ट्र प्रेम को कैसा कारावास।

१९११ से १९२४ ई० तक अण्डमान कारागार में उनकी कुन्दन की स्वस्थ और सुदृढ़ काया अत्याचारों की मार से जर्जर हो गई। उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। वे भारत लाए गए और रत्नागिरि में नज़रबन्द कर दिय गए। १९३६ में जब महाराष्ट्र में कांग्रेस मंत्रिमण्डल बना तो वे कारागार से मुक्त कर दिए गए।

जेल से छूटने पर वीर सावरकर हिन्दू संगठन के कार्यों में सक्रिय रहे। अनेक बार सारे देश का दौरा किया, ओजस्वी भाषणों द्वारा जनता को जगाया। वे हिन्दू महासभा के अध्यक्ष भी चुने गये। वे हिन्दुत्व को ही राष्ट्रीयत्व मानते थे। हिन्दु शब्द की एक ही राष्ट्र–वाचक परिभाषा प्रचार–प्रसार करने में जुट गए।

१९४७ में भारत स्वाधीन हो गया। वे अपने ही जीवन में भारतमाता को बन्धनमुक्त देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए किन्तु भारत विभाजन से उनका हृदय रो उठा। वे अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक अखण्ड भारत का स्वप्न संजोते रहे।

२६ जनवरी १९६६ को वे अनन्त में विलीन हो गए। अपने सम्पूर्ण जीवन को उन्होंने भारतमाता की भक्ति, अदम्य साहस तथा संघर्षमय जीवन का पर्याय बना लिया। युगों–युगों तक वे अपने देशवासियों को राष्ट्र–प्रेम का पाठ पढ़ाते रहेंगे।

जो जीता वही सिकन्दर

– प्रस्तुति : आचार्य रणधीर
शास्त्री विद्याभास्कर, मेरठ

जीतना हारना जीवन के दो किनारे हैं। सच कहा है जो जीता वही सिकन्दर यूनानी बादशाह ने अच्छे व्यवहारों से आकर्षिक करके, फौज को एकत्रित करके उनको अपनी जीवन के लिए महाशक्ति के संस्कारों से निपुण करके, जीवन में फौज की सिपाहियों को अपना बनाया। फिर वह तो उसके लिए मर मिटे। यह थी उसकी सक्षमता। कहने का अर्थ है। वही यात्री सफल होते हैं। जिन्होंने अपनी तीर्थ यात्रा को पूर्ण करने के लिए, सत्य विचार अभिलाषा तथा भक्ति का पवित्र संकल्प सोचा होता है। तन के धोने से मन निर्मल नहीं होता पर शुद्ध कर्म करना ही मन की सत्यता है। जो चंचलता मन का भाव रखते हैं वह हर जीवन की नदी में असफल, निराश होकर बजाये पार करने के डूबते बहते प्रकट होते हैं। प्रभु के कर्म स्वभाव गुण सत्यता के प्रतीक हैं उनमें जिनता मन को लगाकर अनुकरण करो वह सदैव जीत, आनन्द की अनुभूतियां के दैनिक संस्कारों से भरकर मनुष्य की आत्मा को उसके लक्ष्य प्रभु प्राप्ति के लिए विजय का सेहरा बांध देता है। ऐसे व्यक्ति ही महान, आदर्शवादी सच्चे सिकन्दर की पदवी पाते हैं।

शिव भक्त की बात करो, उनकी जीत आनन्द पाने की सिद्धि थी। १८००० फुट हिमालय पर्वत के शिखर पर बैठकर गायत्री माँ के जाप ने उन्हें सत बुद्धि, ज्ञान तथा प्रभु को मिलाया। अपनी पत्नी को इस सिद्धी की सफलता का संदेश सुनाकर उसका भी प्रभु भक्ति में अधिक विश्वास उत्पन्न कराया। यह है संस्कार जो महान आत्मा अपने पद चिन्ह छोड़कर ज्ञान रस की श्रद्धा पाने के लिए प्रभावित करते हैं।

महर्षि देव दयानन्द की वेद अनुभूतियों तथा सच्चे जीवन में सत्य शिव भगवान की प्राप्ति का लक्ष्य क्यों सफल हुआ क्योंकि उनमें एक आशा उठी मेरी जीत तभी लोग सुनेंगे जब मेरा जीवन सत्य, आनंद सब के लिए उपकारक बनेगा। अस्तु उनकी विजय के हम गुण गाते हैं जब आर्य समाज के दस नियम पढ़ते हैं कि प्रत्येक को अपनी उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए पर दूसरों की उन्नति में भी सहायक बनना चाहिए। अतएव पाठकों हम आर्यों की जीत तभी सदा याद रहेगी जब हम शरीर का आत्मा का चोला पहने हुए उस प्रभु के उपकार को न भूले वही करें जो अच्छा है, वही सोचें जो वेदों का ईश्वरीय ज्ञान है, वही अनुकरण करें जो सत्य है और कण–कण में प्रभु कवि ने ऐसा व्यक्त किया है "कण–कण में सूरत तेरी। पल पल पर तेरा नाम। इधर उधर चाहूँ और निहारू तेरी सूरत मेरे नाम।" वस्तुतः प्रभु को मत भूलो, मांगो वह अवश्य पूर्ण करेगा पर हमारे अन्दर बसे हुए प्रभु को योग बल संभावनाओं की प्रेरणा सुनाओ कृतार्थ करेगा।

"न ऋते श्रान्तस्थ संख्याम देवा" : (ऋग्वेद) ईश्वर का न शरीर है, न अंग। उसके न कान, न नाक न मुँह, चल सकता है जब इन सब के रहित है तो हम उस निराकार, व्याप्त के समीप अपनी फर्याद (प्रार्थना) कैसे पहुचांए। पर अंदर ही आत्मा के साथ दो छातीयों के बीच गढ्ढे में साथ वह सूक्ष्मता से बसा हुआ है। अंदर ही हमारी मन की व्यक्त भावनाएं से उसे सुनायेगे भावनाओं की प्रेरणा से बोलेगा। यह मन की विचार धारा ही उसकी भाषा है। हम योग बल से ही भावनाओं से जोड़ेगे। अर्थात जब सब दोनों आत्मा और परमात्मा के स्थान का अंतर न रहे, आत्म प्रकाश हो अज्ञानता, अंधकार, अंधविश्वास न हो। यह ही मेल हम प्रातः समाधिस्थ होकर उस प्रकाश से आत्मा का आनन्द पाकर ईश्वर की प्राप्ति करते हैं। यह है प्रभु विश्वासी का मार्ग, मोक्ष प्राप्ति। अतः ईश्वर की प्राप्ति आत्मा तब ही अपना लक्ष्य पूरा कर सकती है जब सब वह वैराग्य उत्पन्न करके, संसार के प्रलोभनों से दूर हटकर एक ही भावना उत्पन्न करे कि मेरा लक्ष्य है पवित्र मन बुद्धि आत्मा को संबंधों से मुक्त होकर आत्मा की संधि प्रभु से करना (मिन) तथा उसका उपकार फैलाना।

हमारे चारों वेदो की ईश्वरीय ज्ञान की ऋषियों की प्रेरणा की प्राप्ति इसी प्रकार हुई। हमारे वेद प्राचीन संस्कृति ईश्वरीय ज्ञान की सत्य विधाओं की अनुभूतियां, सब प्रकार के विषयों के निधि अमर शब्दों के कोष और ज्ञान के स्त्रोत हैं। जिसने भी उन्हें अध्ययन करने की चेष्टा की, ज्ञान पाया। ईश्वर प्राप्ति का रहस्य जाना तथा अपनी आत्मा को आनन्द और सूक्ष्मता दी फिर भवसागर की यात्रा पार करके महान बनकर अंत पाया। वेदों को ज्ञान क्या है– ऋग्वेद ज्ञान का भण्डार, यजुर्वेद कर्म के प्रधानता का मार्ग की प्रेरणा देने का मार्ग की अनुभूति है, अच्छे कर्म, अच्दे फल की अपेक्षा करो। सामवेद प्रभु की गोद में बैठकर उपासना से, मनुष्य का लक्ष्य आत्मा को परमात्मा से मिलना, फिर पवित्रता से मोक्ष पाना। पर अथर्वेद तो विज्ञान हर ज्ञान का समूह है, जहाँ प्रमाणु, अणु के सहयोग से आगे पदार्थों का बनना रचना का विकास धरती को वनस्पति आदि जल कैसे प्राप्त होता, आकाश, अग्नि सूर्य, वायु मण्डल, ब्रह्माण्ड में बसे हुई जनसंख्या का वितरण और उत्पत्ति का ज्ञान का अनुभव। पाठकों में इस सब को हमारी उंचे शक्तियों, संस्कारों का वास्तविक स्वरूप केवल उनके लिए उल्लेख कर रहा हूं, जो हमारे वेदों को भूल रहे हैं। परन्तु आज की भारतीय मनुष्य आत्मा वेदों से गुमराह होती जा रही है। वेदों को भूला रही है। विदेशी सभ्यता की ओर अधिक झुकाव बढ़ता जा रहा है हिन्दु अपना धर्म, चारों महर्षि जी के आश्रमों को भूल कर छोटी आयु में शादी, विदेशी सभ्यता की चुंगल में फंसकर अपनी रीति रिवाज, धर्म भूल रहे हैं। जानते हो इसाई, इस्लाम लोग देकर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। आज हिन्दुओं की जनसंख्या चौथे स्थान पर है, मुसलमान तीव्रता से संख्या में संतान उत्पन्न करके भारत में, दरिद्रता का अनुपात बढ़ाते जा रहे हैं। राजनीति में शासकों की दृष्टि वोट बैंक के कारण हिन्दुओं को अलग करके Reservation (सुरक्षा) दूसरों को देकर बंटवारा हो रहा है। हिन्दू, आर्य धर्म यानि श्रेष्ठ पुरूष कम होकर अतंकवाद, चोरी, सीना जोरी, नारी का अपमान दहेज प्रथा सती प्रथा सामने प्रकट होने लग गई है। बेटा बेटी का भेद, तलाक, गर्भवती लड़की के डर से जन्म देने बच्चे के प्राण लेती है। मनुष्य कहीं नहीं सुरक्षित। क्या इन समस्या का समाधान कर सकते हैं कठिन है। पर मेरी अपील आर्यसामज के सदस्यों जो बिखर कर फूट पैदा कर रहे हैं। आर्यों कहां है उनका स्वप्न आर्य राष्ट्र, हिन्दी, संस्कृत का विकास एवं प्रान्तिक भाषाओं का निचोड़, हिन्दी राष्ट्र भाषा, धर्म का पालन, वेदों का प्रचार जात–पात का मिटाना। आज यदि हिन्दुत्व, वैदिक अनुभूतियों की रक्षा करनी है, ओ३म् के झंडे के नीचे एक ध्वनि उठाओ। हमारा लक्ष्य है स्वतंत्रता तथा धर्म की रक्षा, नारी का मान मजूदरों का हित, गरीबी मिटाना शिक्षा का विकास। अंधकार और असत्य का विरोध प्रतिरोध पिछड़ों को लाने के लिए प्रतिशोध जो तभी हो सकती है जब जबरन शुद्धि कार्य आरंभ करें अतः सत्य प्रकाश के लिए हमारे ग्रंथ कहते हैं "ओ३म् असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योर्तिगमय मृत्योर्मा अमृतंऽगमय"।

शांति शांति जुट जागो सब

दुःख की पोटली

– प्रस्तुति : आचार्य कुलदीप शास्त्री
गुरूकुल पूठ

एक आदमी जाके निरन्तर रोता था, कि, "हे प्रभु, मुझे इतना दुखी क्यों बनाया? आख़िर मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? ये अन्याय हो रहा है। और मैं तो सुनता था, तू बड़ा न्यायी है, रहीम है, रहमान है, कृपालु है, महाकरूणावान है! मगर सब धोखे की बातें हैं। मुझे इतना दुःख क्यों दिया? सब मज़े में हैं। सब आनन्द कर रहे हैं। मैं ही दुःख में सड़ा जा रहा हूँ। कुछ कृपा कर! अगर सुख न दे सके तो कम से कम इतना तो कर कि किसी और का दुख मुझे दे दे, ये मेरा दुख किसी और को दे दे। इतना तो कर!"

उसने एक रात सपना देखा कि कोई आवाज़ आकाश से कह रही है कि, "सब लोग अपने–अपने दुःख लेके मस्जिद पहुंच जाएं। वो तो बड़ी जल्दी तैयार हो गया। उसने जल्दी से अपना दुख बांधा, पोटली उठाई, भागा मस्जिद की तरफ। खुद भी भागा, उसने देखा, बड़ा हैरान हुआ, पूरे गांव के लोग अपनी–अपनी पोटलियां लिए जा रहे हैं। वो तो सोचता था जिनके जीवन में कोई भी दुख नहीं है.. राजा भी भागा जा रहा है! वज़ीर भी भागे जा रहे हैं। नेता भी भागे जा रहे हैं, पण्डित–पुरोहित भी भागे जा रहे हैं! उसने मौलवी को भी देखा, वो भी अपना गठ्ठर लिए चला जा रहा है। सबके गट्ठर हैं। और एक और बात हैरानी की मालूम हुई... किसी के पास छोटी–मोटी पोटली नहीं। क्योंकि वो सोचने लगा कि, "किससे बदलना है अगर बदलने का मौका आ जाए। मगर सब बड़ी–बड़ी पोटलियां लिए हुए हैं। ये तो पोटलियां कभी दिखाई भी नहीं पड़ी थीं उसको। अभिनय चलता है। मस्जिद में पहुंच गए। बड़ा उत्तेजित! सारे लोग उत्तेजित हैं कि कुछ होने वाला है। और फिर एक आवाज़ हुई कि, "सब लोग मस्जिद की खूंटियों पर अपनी–अपनी पोटलियां टांग दें।"

सबने जल्दी से टांग दी। सभी छुटकारा पाना चाहते हैं। और फिर एक आवाज़ हुई कि, "अब जिसको जिसकी पोटली चुननी हो, चुन ले, बदल लें।" और वो आदमी भाग। और सारे लोग भागे। मगर चकित होने की बात तो ये थी कि उस आदमी ने भाग के अपनी पोटली फिर से उठा ली, कि कोई दूसरा न उठा ले। और यही हालत सबकी थी... सबने अपनी–अपनी उठा ली। वो बड़ा हैरान हुआ, लेकिन अब बात उसके ख्याल में आ गई। उसने अपनी क्यों उठाई? सोचा कि, "अपने दुख कम से कम परिचित तो हैं दूसरे का बड़ा पोटला है, और पता नहीं, इसके भीतर क्या हो! अपने दुख कम से कम जाने–माने तो हैं, उनके साथ जीत तो रहे हैं जिन्दगी भर, धीरे–धीरे उतना उनसे दुख भी नहीं होता।

काँटा गड़ता ही रहा तो, गड़ता ही रहा हो, गड़ता रहा हो तो धीरे–धीरे चमड़ी भी मजबूत हो जाती है, उस जगह कांटा गड़ते–गड़ते फिर चमड़ी में उतना दर्द भी नहीं होता। सिरदर्द जिन्दगी भर होता ही रहा तो धीरे–धीरे आदमी भूल ही जाता है.. सिरदर्द और सिर में कोई फर्क नहीं रह जाता। एक अभ्यास हो जाता है। और तब उसे समझ में आया कि सबने अपने–अपने उठा लिए... सब डर गए है कि, "कहीं दूसरे का न उठाना पड़े, पता नहीं दूसरे की अपरिचित पोटली, भीतर कौन से साँप–बिच्छू समाए हों।" प्रत्येक ने अपनी–अपनी पोटलियां उठा लीं और सब बड़े खुश हैं कि अपनी पोटली वापस मिल गई। और सब अपने घर की तरफ भागे जा रहे हैं। सुबह जब उसकी नींद खुली, तब उसे सच्चाई समझ में आई... ऐसा ही है। यहां सब दुःखी हैं। मगर एक अभिनय चल रहा है। इस अभिनय से जो जाग गया उसके जीवन में ही संन्यास का जन्म होता है। अभिनय से जाग जाना सन्यास हैं जो साक्षी हो गया वो जी गया। जिसने परमात्मा से प्रेम किया वही आनन्द से पूर्ण है वही सुखी है।

श्राद्ध और तर्पण– ज्ञानपूर्वक किया गया कर्म ही फल दायक होता अन्य नहीं

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आजकल देश में श्राद्ध एवं तर्पण का पक्ष चल रहा है। श्राद्ध के बारे में मान्यता है कि भाद्रपद महीने के कृष्णपक्ष में मृतक माता–पिता, दादी–दादा व परदादी–परदादा का श्राद्ध करने से वह तृप्त होते हैं। इसके लिए पण्डितों व ब्राह्मणों को भोजन कराने सहित यज्ञ–हवन व दान–पुण्य का महत्व माना जाता है। देश के अधिकांश व सभी हिन्दू इस श्राद्ध कर्म को करते हैं और मानते हैं कि इससे उनके मृतक माता–पिता आदि तृप्त अर्थात् एक वर्ष तक भूख से निवृत्त हो जाते हैं। क्या यह बात वैदिक सिद्धान्तों से सत्य व पुष्ट है, इस पर कोई विचार नहीं करता। श्राद्ध व अन्धविश्वासों से जिनको लाभ हो रहा है वह तो क्यों विचार करेंगे परन्तु जिन्हें इस काम पर धन व समय का व्यय करना होता है, वह भी इस पर विचार नहीं करते। यह भी कह सकते हैं कि उनके पास इसके लिए न तो समय है और न ही विवेक बुद्धि। हमारे पण्डित बन्धु भी श्राद्ध को तर्क की कसौटी पर सिद्ध नहीं करते। मृतक श्राद्ध को तर्क बुद्धि से सिद्ध किया भी नहीं जा सकता। अतः हमारा देश इस कर्म को करके किसी भी लाभ को प्राप्त नहीं हो रहा है अपितु अपनी व समाज की हानि ही कर रहा है। कैसे हानि कर रहा है, इस पर विचार करते हैं।

सनातनी पौराणिक जगत् में १८ पुराणों को ईश्वरीय ज्ञान वेदों से भी अधिक महत्व प्राप्त है। महाभारत काल व उसके बाद बुद्धकाल तक के वर्षों में इनका अस्तित्व नहीं था। संसार में सबसे अधिक पुराने ग्रन्थ वेद हैं उसके बाद चार ब्राह्मण ग्रन्थ एवं मनुस्मृति सहित उपनिषदों एवं दर्शन ग्रन्थों की रचना हुई। महाभारत काल तक पूरे विश्व में वैदिक धर्म पताका फहराती थी। न पौराणिक मत थे, न बौद्ध व जैन मत तथा न ईसाई व इस्लामत मत अस्तित्व में आये थे। पुराणों की रचना महाभारत के बहुत बाद बुद्धकाल के बाद होना आरम्भ हुई और कुछ पुराणों के श्लोकों से तो ऐसा विदित होता है कि अंग्रेजों के भारत में आने तक पुराणों की रचना होती रही। अतः पुराणों की बातें इनके रचनाकाल के आधार पर सनातन नहीं हो सकती। वेद ही पुरातन, अनादि, नित्य व सनातन ज्ञान के पुस्तक हैं जिनका आविर्भाव ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में किया था। सृष्टि के आरम्भ से हमारे सभी ऋषि मुनि वेद को ही सब सत्य विद्याओं की पुस्तक मानते चले आये हैं। वैदिक परम्परायें एवं वेद ज्ञान ही सनातन है। अन्य कोई ग्रन्थ सनातन नहीं है। वेद को पढ़ना, उसका पालन तथा प्रचार–करना ही मनुष्य का धर्म है। वेदों में जीवित माता–पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा सुश्रुषा करने का विधान है, वहीं मृतक माता–आदि पितरों का श्राद्ध करना, पण्डितों के माध्यम से उन्हें भोजन कराने का किंचित भी विधान नहीं है। महाभारत काल के बाद देश में घोर अविद्यान्धकार छा गया था। वेदों का पठन पाठन बन्द हो गया था। वेदों के प्रचार का तो प्रश्न ही नहीं था। कुछ सीमित परिवार ही वेदों को कण्ठस्थ करते थे परन्तु वह भी वेदों के अर्थ नहीं जानते थे। वेदों को कण्ठस्थ करने से यह लाभ अवश्य हुआ कि वेद सुरक्षित रह सके। यह भी परम्परा रही है कि वेद विरूद्ध कर्मों को करना पाप व मिथ्या कर्म है। मृतक श्राद्ध क्यों अकरणीय है, इसके कुछ कारण निम्न है–

१. जीवात्मा के परमात्मा से व्याप्य–व्यापक तथा पिता–पुत्र आदि के अनेक सम्बन्ध हैं परन्तु असंख्य व अनन्त जीवात्माओं का आपस में माता–पिता, बन्धु, सखा आदि किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सम्बन्ध हर जन्म में बदलते रहते हैं। आज मेरा जो पिता है अगले जन्म में वह मेरा पुत्र भी हो सकता है। इसी प्रकार से अन्य सभी सम्बन्धों की स्थिति है।

२. परमात्मा जीवात्मा का सम्बन्ध माता–पिता से जोड़ता है। यह सम्बन्ध जीवात्मा के पिता व माता के शरीर व गर्भ में आने से आरम्भ होता है। जन्म होने पर अन्य सम्बन्ध भी बनते है जैसे की भाई, बहिन, दादी, दादा, मौसी, मामा, ताऊ, चाचा, बुआ, फूफा, आचार्य–शिष्य आदि। यह सम्बन्ध जन्म के साथ बनते हैं। जन्म से पूर्व जन्म लेने वाली जीवात्मा के यह सम्बन्ध नहीं होते।

३. जीवात्मा के सभी सम्बन्ध अपने परिवार व सम्बन्धियों से मृत्यु होने पर समाप्त हो जाते हैं। जीवात्मा जिन माता–पिता व दादी–दादा आदि की सन्तान थी, उनकी मृत्यु होने पर मृतकों की जीवात्माओं से वह सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। मृत्यु होने पर मृतक जीवात्मा के अपने माता–पिता, पत्नी पुत्र व पुत्रियों से सभी प्रकार के सम्बन्ध भी टूट जाते हैं। मृत्यु के बाद मृतक शरीर का दाह संस्कार करना ही सन्तानों व परिवारजनों का एकमात्र कर्तव्य होता है। अन्य कोई सम्बन्ध नहीं होते।

४. मृत्यु के बाद हमारे माता–पिता, दादा–दादी तथा परदादा–परदादी अपने कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से पुनर्जन्म को प्राप्त हो जाते हैं। जन्म से पूर्व जीवात्मा माता के गर्भ में माता के भोजन से ही अपने शरीर के लिए आवश्यक भोजन ग्रहण करता है और जन्म लेने के बाद कुछ समय तक माता व गोदुग्ध का पान करता है तथा उसके बाद वह अन्न, फल, दुग्ध आदि का सेवन भोजन के रूप में करता है।

५. भोजन की आवश्यकता हमारे शरीर को होती है। अन्न, फल, दुग्ध आदि पदार्थों व भोजन की आत्मा को आवश्यकता नहीं होती। आत्मा का भोजन तो सद्ज्ञान व सद्कर्म हैं। मनुष्य को ज्ञान वेद और उस ज्ञान के अनुरूप कर्म करके आत्मा सन्तुष्ट व उन्नति को प्राप्त होता है।

६. जब मृतक को भोजन व अन्य किसी पदार्थ की आवश्यकता ही नहीं है तो फिर हम श्राद्ध के माध्यम से जो अनावश्यक कर्म करते हैं, उससे हम अपने समय व धन की हानि ही करते हैं। साथ ही ऐसा करके अपनी बुद्धि का सदुपयोग न कर उसका दुरूपयोग ही करते हैं। हम समझते हैं कि ईश्वर की व्यवस्था से मृतक श्राद्ध कर्म का कुछ दण्ड हमें कर्म फल सिद्धान्त के अनुसार मिल सकता है।

७. हम इस जन्म में जब से पैदा हुए हैं, तब से व उसके बाद कभी हमें हमारे पूर्वजन्म की सन्तानों व परिवारजनों से श्राद्ध के दिनों में भोजन प्राप्त नहीं हुआ। हमें आवश्यकता ही नहीं थी। हमने श्राद्ध के दिनों में पूर्व दिनों की तरह भरपूर व भरपेट भोजन किया। वह हमारा स्वोपार्जित था न कि पूर्वजन्म के सम्बन्धियों द्वारा भिजवाया हुआ था। यदि हमें हमारे पूर्व जन्म के परिवार के पुत्र, पौत्र व प्रपौत्र भोजन भेजते और वह में प्राप्त होता तो हमारा कर्तव्य था कि हम उनको धन्यवाद तो करते। इससे श्राद्ध विषयक परिपाटी व जो कर्मकाण्ड किया जाता है वह सब काल्पनिक एवं मिथ्या सिद्ध होता है।

८. हिन्दू समाज में श्राद्ध की जो परम्परा है वह केवल श्राद्धपक्ष के १५ दिनों में से किसी एक या दो दिन ही की जाती है। कोई पूरे पन्द्रह दिन भी कर सकता है। अब यदि हमारा भोजन व अन्य पदार्थ जो हम पण्डित जी को दान करते हैं, वह हमारे पूर्वजों तक पहुंचते हैं तो भोजन तो मनुष्य दिन में कई बार अथवा दो बार तो करता ही है। हम वर्ष के ३६५ दिनों में से एक दो दिन या १५ दिन भोजन कराते हैं। शेष ३५० दिन तो हमारे माता–पिता आदि पूर्वज भूखें रहते होंगे? इसका तर्क व बुद्धि संगत उत्तर हमारे उन पण्डितों को देना चाहिये जो मृतक मनुष्य का श्राद्ध कराने का समर्थन करते हैं।

९. श्राद्ध के दिनों में मनुष्य बहुत से काम नहीं करते। कुछ यात्रायें नहीं करते तो किसी को वाहन खरीदना हो वह वाहन नहीं खरीदता। भोजन के नियम भी हैं जिसका पालन किया जाता है। कुछ मनुष्य सिर के बाल, दाढ़ी व नाखून आदि नहीं काटते व कटवाते। इस प्रकार के सभी नियम निरर्थक सिद्ध होते है।

१०. मान लीजिये कि कोई व्यक्ति मरने के बाद पशु, पक्षियों आदि किसी योनि में पुनर्जन्म को प्राप्त हुआ। शेर का भोजन मांस है। हाथी यद्यपि शाकाहारी हैं परन्तु वह खाता बहुत मात्रा में है। हिरण, गाय, भैंस आदि का भोजन घास है तथा पक्षियों का वृक्षों पर बैठकर फल आदि खाना है। अतः श्राद्ध में पण्डित जी को खीर व पूरी खिलाना शेर, गाय, भैंस आदि के किसी काम नहीं आयेगा। इसके लिए तो हमें साथ में घास, मांस आदि पदार्थों को श्राद्ध में सम्मिलित करना होगा।

हम समझते हैं कि कोई बुद्धिमान व समझदार व्यक्ति कभी अपने मृतक परिवारजनों का श्राद्ध नहीं करेगा। फिर श्राद्ध कैसे करें इसका तरीका यह है कि हम अपने जीवित माता–पिता, दादी, दादा, परदादी–परदादा में से जो–जो जीवित हों उनकी पूरी निष्ठा व सिद्दत से सेवा करें। उन्हें समय पर अच्छे से अच्छा भोजन करायें। उन्हें स्वच्छ व करके किसी लाभ की तो प्राप्त नहीं हो रही है अपितु अपनी व समाज की हानि ही कर रहा है। कैसे हानि कर रहा है, इस पर विचार करते हैं।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य ईश्वरोपासना व अग्निहोत्र यज्ञ आदि करते हुए सत्यासत्य को जानकर व विचार कर कर्म करना है। हमें सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग में भी सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। यह कार्य सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से हम श्राद्ध को सार्थक रूप में करेंगे और उसके अन्धविश्वासों से युक्त पक्ष को छोड़कर अपने जीवन को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर कर सकेंगे। ओ३म् शम्।

शुद्धि दीक्षा

१. विज्ञापित किया जाता है, कि दिनांक ६.१०.२०१८ को आर्य समाज माती (कानपुर देहात) में शायरीन आयु लगभग २३ वर्ष (बालिग) पुत्री महता निवासिनी साधोपुर थाना बादलपुर, जनपद– गौतम बुद्धनगर ने बिना किसी जोर दबाव के अपनी स्वेच्छा से इस्लाम धर्म को त्यागकर, वैदिक धर्म में दीक्षा ग्रहण कर ली है, तथा आर्य समाज व्यवस्था/सिद्धान्तों में अपना, समग्रता के साथ विश्वास व्यक्त किया है। तत्पश्चात कु० शायरीन (मूल नाम) को कु० शिवानी सिंह राजपूत के नाम जाना जायेगा।

२. विज्ञापित किया जाता है कि दिनांक ६.१०.२०१८ को आर्य समाज शिवकटरा कानपुर में कु० हीना आयु २२ वर्ष, पुत्री स्व श्री आबिदशाह निवासिनी ग्राम चोइनगला, थाना सहसवान, जिला–बदायूँ ने बिना किसी जोर दबाव के अपनी स्वेच्छा से इस्लाम, धर्म /विचार धारा त्यागकर वैदिक धर्म में दीक्षा ग्रहण कर ली है। तथा आर्य समाज व्यवस्था/सिद्धान्तों में अपना समग्रता के साथ विश्वास व्यक्त किया है। तत्पश्चात् कु० हीना (मूलनाम) को कु० कोमल के नाम से जाना जायेगा।

समाचार

आर्य समाज बहजोई जनपद सम्भल का वार्षिक सम्मेलन १६, २० एवं २१ सितम्बर २०१८ को बड़े ही हर्षोल्लास एवं भव्यतापूर्ण मनाया गया। प्रथम दिवस प्रातः योग, यज्ञ भजन–प्रवचन व दोपहर १२ बजे से विशाल भव्य शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से निकलकर आर्य समाज मन्दिर पर पहुंच कर सम्पन्न हुई। तीनों दिन तीनों सभाऐं नियमित रूप से हुई। नारी सम्मेलन में महिला आर्य समाज बहजोई की सभी महिलाओं एवं पदाधिकारियों ने सहभागिता कर सम्मेलन को सफल बनया।

कार्यक्रम में आर्य भजनोंपदेशक संगीतकार दिनेश आर्य "पथिक" एवं आर्य प्रवक्ता शिवकुमार शास्त्री (सहानपुर) उपस्थित अपार आर्य समूह को अपने भजनों एवं उपदेशों से प्रभावित कर सभी मन्त्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम में दयानन्द विदेह (करंनाल) दिनेश आर्य 'पथिक' शिवकुमार शास्त्री (सहारनपुर), सुमन कुमार 'वैदिक' (अमृतसर) डा० पवित्रा आर्या कन्या गुरूकुल सासनी हाथरस (कन्याओं सहित) स्वामी सम्मान मुनि (अमरोहा) दयाशंकर आर्य (भारत स्वाभिमन ट्रस्ट हरिद्वार), रामवीर शास्त्री, सांसद सत्यपाल सैनी, श्रीमती पूनम यादव, भारत सिंह यादव, आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ के उप–प्रधान श्री ज्ञानेश जी 'गाँधी', प्रदीप कुमार वर्मा अमरीश कुमार आर्य, लक्ष्मी नारायण आर्य (जिला प्रधान) डा० अशोक आर्य (अमरोहा) विद्युत कुमार आर्य (प्रधान) राजेन्द्र सिंह आर्य (बबराला) पुष्पेन्द्र कुमार आर्य खान चन्द्र आर्य, नरेशचन्द्र आर्य आदि–आदि महानुभावों ने सम्मेलन को सम्बोधित किया।

समाचार

जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ के द्वारा पितृपक्ष में आर्य विद्वानों क़ा सम्मान कर श्राद्ध और तर्पण का वैदिक स्वरूप समाज के सामने आदर्श रूप में स्थापित किया गया। विदित हो कि सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट द्वारा स्थापित यह संस्था वेदप्रचार के लिए समर्पित है। ट्रस्ट तथा संगठन के संस्थापक आचार्य विश्वव्रत शास्त्री के मार्गदर्शन १० सदस्यों का एक प्रतिनिधि मण्डल लखनऊ से कानपुर पहुंचकर, सम्प्रति वहां ६६ वर्षीय आर्य समाज के वयोवृद्ध प्रचारक महात्मा जलेश्वर मुनि जी जो वर्तमान में अस्वस्थ्य चल रहे हैं उन्हें सम्मानित किया।

सम्मान स्वरूप संगठन ने उन्हें खाद्य सामग्री के साथ आर्थिक सहयोग देकर वैदिक श्राद्ध की परम्परा का प्रदर्शन कर समाज के सामने उत्तम आदर्श स्थापित किया गया। इसी क्रम में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, के संरक्षण में संगठन के द्वारा स्थापित वेद प्रचार मण्डल राजाजीपुरम के सचिव श्री बी.पी. आर्य सहित ६ सदस्यों के प्रतिनिधि मण्डल ने दिनांक ६ अक्टूबर के पूर्व सम्पादक ६२ वर्षीय आचार्य वेदव्रत अवस्थी जी को भी खाद्य सामग्री, दवाइयां, वस्त्र तथा आर्थिक सहयोग देकर उन्हें भी सम्मानित किया।

यज्ञीय आयोजनों के अन्तर्गत वेद प्रचार संगठन के द्वारा प्रत्येक महा जनपद लखनऊ के विविध क्षेत्रों में ११ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन निरन्तर कई महीनों से चल रहा है।। उसी क्रम में दिनांक ७ अक्टूबर को वेद प्रचार मण्डल अलीगंज द्वारा रामराम बैंक चौराहे के समीप स्थित मनमोहन पार्क में ११ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन अपराह्न ४ बजे से ७.३० बजे तक उल्लासपूर्वक सम्पन्न किया।

इस कार्यक्रम की विशेषता थी कि इसमें ब्रह्मा पद पर महिलायें विराजमान थी, श्रीमती प्रियंका शास्त्री, श्रीमती यशोदा शर्मा व श्रीमती कविता सहगल के पौरोहित्य में विशुद्ध मन्त्रपाठ के साथ श्रद्धालु यजमानों से आवेष्टित यज्ञ कुण्डों में विविध औषधियों से समन्वित सामग्री तथा गौ घृत से आहुतियां समर्पित कर वातावरण को शुद्ध करने का पुरूषार्थ किया गया।

यज्ञ के समाप्ति पर वेद प्रचार का प्रभावी कार्यक्रम दर्शनीय था। जिसमें वैदिक विद्वान आचार्य विश्व्रत शास्त्री डा० सत्यकाम आर्य आदि विद्वानों के उपदेश हुए। कार्यक्रम की समाप्ति पर श्री मनमोहन तलवार जी ने उपस्थित श्रोताओं व विद्वान, विदुषियों के प्रति आभार प्रदर्शित किया। इस कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में क्षेत्रीय श्रद्धालु तथा गणमान्य लोग उपिस्थत हुए।

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
....
....

प्रदेश के आर्य समाजों के कार्यक्रमों की झलकियाँ

श्री सत्यनारायण ट्रस्ट द्वारा आचार्य वेदव्रत अवस्थी पूर्व सम्पादक आर्यमित्र का सम्मान तथा वयोवृद्ध जलेश्वर मुनि कानपुर का सम्मान करते हुए आर्यजन

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चोरपाकला मऊ में ˚राममगन आर्य भजन प्रस्तुत करते हुए

श्री सत्यनारायण ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा ११ कुण्डीय यज्ञ

साप्ताहिक आर्य सन्देश

ओ३म्

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018

तदनुसार कार्तिक कृ० १, २, ३, ४ विक्रमी सम्वत् २०७५

विश्व शान्ति यज्ञ, योग तथा सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर
तपोनिष्ठ संन्यासियों एवं वैदिक विद्वानों के प्रेरणास्पद उद्बोधन एवं प्रवचन

लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली

निवेदक

डॉ० धीरज सिंह आर्य
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

अरविन्द कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।